GHAZAL

HARIHARAN a widely popular exponent of clasical based Ghazals.
(Bombay)

ग़ज़ल

GHAZAL

Amazingly varied and lasting have been the musical contributions of *HAZRAT AMIR KHUSRAU* (1255-1325) the multi-faceted genius who throve in the Imperial darbar of Delhi-one of them being the GHAZAL. Even today Khusrau's Persian Ghazals are being sung "not only in Delhi, Lucknow and Hyderabad, but also in Lahore, Teheran and Tashkent"! The word *"GHAZAL"* which originated from Arabic means "speaking in the language of love" or "making the yearning experienced in love known to the beloved". The unashamedly romantic contents are of immense mass-appeal. Longing for the beloved and worries about rivals bring pain to the romantic poet whose only obsession is to send messages to the beloved through a messenger *(quasid).* If the beloved just condescends to throw him a few glances, or gives him a few moments, he is thrilled. But if her response is indifference *("berookhi")* then the forlorn lover spends his nights in anguish, speaking to the moon and stars and appealing for God's mercy. Our sweetest songs are those that tell of saddest thoughts. When the lover is in a desperately dejected mood due to "her" indifference, he seeks solace in wine *("sharaab")* in the *maikhana* ("wine house"). When he is spurned, he awaits merciful release through Death while the lamp *("Shama")* burns all night for the break of Dawn (the Day of Judgement). This is the stuff that appeals to masses overwhelmingly, but this is only the mundane aspect, the obvious meaning.

But Amir Khusrau being a higly evolved *SUFI* mystic, and the beloved disciple *("mureed")* of *HAZRAT NIZAMUDDIN* AULIA, the great Sufi-Saint, the Ghazals that he created or popularised

had simple, direct, ecstatic, spiritual contents. When he addressed "a beloved", he actually meant his spiritual preceptor and guide Nizamuddin Aulia! As the Ghazal-form evolved, later *"Shayars"* (Urdu poets) began to express even social and political themes. Nearer our times, poets like Faiz made it their vehicle to convey political & revolutionary ideas.

Since the times of Wajid Ali Shah, Lucknow has been a great centre of *GHAZAL* which represents the refined synthesis of many cultures -*Persian, Arabic, Turkish,* and *Hindi.* It is said that in Iran which was the cradle of *GHAZAL*, these verses were only recited, and never sung, but as *Galib* truly said:- *"Without music, the Ghazal was like a cup without wine".*

Begum Akhtar *"the Mallika-E-Ghazal"* of Lucknow was a trend-setter in presenting Ghazals in the semi-classical style. based on raga-raginis and in an impressive classical mould. She elevated the very status of Ghazal, and the markets are flooded with her L.P. records and cassettes even now. In recent times, celebrated Ghazal exponents from Pakistan (like Mehendi Hassan, Chote Ghulam Ali, Farida Khanum, Iqbal Bano, Munni Begum etc) have inspired Indian Ghazal singers and we have a number of highly popular singers with the incomparable Jagjit Singh and his wife Chitra Singh on the top of the popularity chart. Talat Mahmood, now enfeebled with age, was once a great favourite as a broadcaster in Lucknow, and then in the world of films in Bombay. Kundan Lal Saigal also was a hot favourite in his times. Today a large number of Ghazal-singers are enjoying mass popularity, and among them are-Hariharan, Asha Bhonsle, Talat Aziz, Mohamad and Ahmad Hussain brothers, Pinaz Masani, Anup Jalota, Dilraj Kaur, Satish Babbar, Neelam Sahni, Rajendra & Neena Mehtas, Sudhir Narayan, Pankaj Udhas, Bhupendra and so on. The Ghazal has become a great fashion attracting not only professionals of good standards but also large numbers of fashionable society ladies with inadequate musical training, but fired by the ambition to grab some limelight as "T.V. singers" boosted by a large number of accompaniments (to cover up the faults), and with glamorous costumes and scenes to catch the eyes!. The Ghazal fad has been promoted through media like T.V., AIR, films, discs, and cassettes

galore! The sophisticated and ornate style of Lucknow's "Mallika-E-Tarannum" Begum Akhtar can be heard through the music of Shobha Gurtu, and a few devoted disciples of the Begum..

Although initially borrowed from Persian and Arabic sources, the *GHAZAL* in India has gained in refinement "through the interactions of various languages". It is subtle, gentle, and compressed in expression. It is a delicate, sensitive, and sensuous art".

A long line of brilliant Urdu poets (Shayars) right from Khusrau to our contemporaries has enriched the world of Ghazals, but their poems would not have won such wide popularity, but for the magical voices and emotional renderings of so many unforgettable singers. As Naseem Mukri wrote;- "It is the heart, not the ears that listens to the GHAZAL ; it is the heart that understands and interprets that thought in the Ghazal and feels the searing warmth that emanates from the expression in the Ghazal". The Ghazal-fad has caught on, and the Ghazal is the "in" thing today in films and in *"mehfils"* (private soirees") and also from public platforms.

- SUSHEELA MISRA

ANOOP JALOTA,
a popular exponent of Bhajans and Ghazals (Lucknow)

गज़ल

हिन्दुस्तानी संगीत के किसी भी पहलू को लें, उसमें हज़रत अमीर खुसरो की बहुमुखी प्रतिभा की कोई न कोई चर्चा निकल आती है। गज़ल की देन भी हिन्दुस्तानी संगीत को अमीर खुसरो से मिली। आज भी उनकी फारसी गज़लें न केवल दिल्ली, लखनऊ, हैदराबाद, बल्कि लाहौर, तेहरान और ताशकन्द में भी लोकप्रिय हैं।

''गज़ल'' शब्द का अर्थ है महबूब से गुफ्तगू। गज़ल का रूमानी रूप श्रोता समूहों में अत्यन्त लोकप्रिय है। महबूब के लिये तड़प और रक़ीबों की तरफ से चिन्तायें शायर को मजबूर करती हैं कि वह किसी क़ासिद (सन्देश वाहक) के माध्यम से महबूब तक हालेदिल पहूँचाने की कोशिश करे। शायर की सादगी देखिये कि महबूब की दो-एक प्यार भरी नजरें या उसके पास पल दो पल का समय मिलने से उसे अत्यन्त सुख मिलता है। इससे उलट यदि उसे बेरूखी और बेमियाजी का बर्ताव मिले तो उसे रात-रात भर नींद नहीं आती और चाँद सितारों से दीवानों की तरह बातें करता है, खुदा से रहम की भीख मांगता है। उसकी ये उदासियाँ गज़ल का खास रंग हैं। उदास गीत ही हमारे सबसे प्यारे गीत होते हैं। गज़ल का एक पहलू और है। जब महबूब की बेनियाज़ी से शायर का दिल टूट जाता है, तो वह मैख़ाने में जाकर शराब में गम डुबोकर सुकून तलाश करता है। ठुकराये जाने पर वह कभी मौत का इन्तजार करता है, बिल्कुल वैसे ही जैसे शमा भोर होने तक रात भर जलती है। गज़ल के ये सब रंग जन-जन मे बेहद लोकप्रिय हैं लेकिन ये सब तो ऊपरी बातें हैं जिनमें कोई पर्दा कोई रहस्य नहीं।

अमीर खुसरो शायर तो थे, बहुत बड़े सूफी भी थे। महान सूफी सन्त हज़रत निजामुद्दीन औलिया क प्यारे मुरीद थे। अमीर खुसरो ने जो गज़लें अपने मुरशद से सम्बन्धित रचीं, उनकी सादगी और उनके तीखे मस्ती-भरे आध्यात्मिक शब्द हर श्रोता के दिल में उतर जाते हैं। अमीर खुसरो जब महबूब की बातें करते हैं तो उनका इशारा अपने आध्यात्मिक गुरू और मुरशद हज़रत निजामुद्दन की तरफ होता है।

जैसे-जैसे गजल का रंग-रूप बदलता निखरता गया शायर महबूब से इश्क और मिलन की चाह के अतिरिक्त सामाजिक और राजनीतिक बातें भी गज़ल के दामन में समेटने लगे। फ़ैज अहमद फ़ैज जैसे संवेदनशील शायरों ने गज़ल को राजनीतिक और इन्कलाबी विचारों का परचम (ध्वज) बनाया है।

लखनऊ हमेशा गज़ल का केन्द्र रहा है। गज़ल की भाषा में फ़ारसी, अरबी, तुर्की और हिन्दी के शब्द और इसके वजूद में कई संस्कृतियों के विविध रंग घुलमिल गये हैं। सुनने में आता है कि ईरान में (जिसे गज़ल का पालना कह सकते हैं) गज़ल के शेर मात्र पढ़े जाते थे, गाये नहीं जाते थे। लेकिन ग़ालिब ने क्या खूब कहा है ''संगीत के बिना गज़ल शराब के खाली जाम जैसी है''।

गज़ल को संगीत दिया भारत में इस सदी में लखनऊ की ''मलिका-ए-गज़ल'' बेगम अख्तर ने। राग-रागनियों पर आधारित अर्धशास्त्रीय शैली में सजाकर बेगम अख़्तर ने गज़लों को दिलकश शास्त्रीय विन्यास प्रदान किया। उन्होंने गज़ल-गायकी को एक नयी बुलन्दी दी। आज भी रिकार्डेड संगीत की दुकानों में बेगम अख्तर के बेशुमार एल.पी. रिकार्ड्स और कैसेट्स मिलते हैं।

आज के दौर में पाकिस्तान के विख्यात गज़ल गायक मेंहदी हसन, गुलामअली, फरीदाख़ानम, इकबाल बानो, मुन्नी बेगम आदि के अन्दाज़ की कुछ परछाइयाँ हमारे देश की गज़ल-गायकी में भी मिलती हैं। हमारे देश के मुख्य गज़ल गायकों में बेहद सुरीले गायक जगजीत सिंह का नाम लोकप्रियता के शिखर पर है। तलत महमूद, जो अब वक्त और बुढ़ापे के हाथों बेबस हो गये हैं, किसी ज़माने में आकाशवाणी लखनऊ के शीर्षस्थ गज़ल-गायक थे, जो बाद में बम्बई की फिल्मी दुनियाँ में भी खूब गूँजे, खूब चमके। अपने समय में लोकप्रिय गायक कुन्दनलाल सहगल ने कुछ गज़लें गाईं। आजकल के लोकप्रिय गज़ल गायक-गायिकाओं में प्रमुख हैं-हरिहरन, तलत अज़ीज, दिलराज कौर, आशा भोन्सले, पीनाज़ मसानी, अनूप जलोटा, सतीश बब्बर, नीलम साहनी, राजेन्द्र और नीना मेहता, अहमद और मोहमद हुसेन बन्धु, सुधीर नारायण, पंकज उदास, भूपेन्द्र आदि।

बेगम अख्तर की गज़ल-गायकी की शानदार शैली की झलक शोभा गुर्टू और बेगम साहिबा की शिष्याओं के संगीत में भरपूर मिलती है।

आजकल जमाना है गज़ल का। गज़ल-संगीत फैशन भी है, धन्धा भी। आज गज़ल-गायकी का उच्च स्तर भी है, लेकिन उसके साथ-साथ कई कलाकार अधूरी संगीत शिक्षा लेकर गज़ल गायक गायिकायें बन बैठी हैं ताकि उनका नाम हो। गायन की कमियों को छुपाने के लिए वे संगत कलाकारों की भीड़, चमकीली वेशभूषा और जगमगाती रोशनी का सहारा लेती हैं। इस तरह की गज़ल-गायकी को टी.वी., रेडियो, फिल्म और रिकार्ड-कैसेट्स बनाने वाले मीडिया ने बहुत सहारा दिया है।

गज़ल हमारे देश में आयी थी फ़ारसी और अरबी की राहों से, लेकिन हमारे देश की विविध भाषाओं के सुन्दर रंगों में सजकर अब अपनी सी लगती है, अजनबी महसूस नहीं होती। इसकी सूक्ष्म, सभ्य अभिव्यक्ति, इसकी नज़ाकत, संवेदनशीलता और रोम-रोम जगाने वाला अंदाज इसके कलात्मक सौन्दर्य की जान हैं।

अमीर खुसरो के जमाने से आज तक उर्दू शायरों का एक शानदार सिलसिला है, जिसने न केवल गज़ल की दुनिया आबाद की, बल्कि उसे लाज़वाब हुस्न (अमर सौंदर्य) दिया। उसके बावजूद अगर गज़ल को अमर आवाजों और उनके जादू का सहारा न मिला होता तो गज़लों को ऐसी लोकप्रियता कहाँ मिल पाती?

नसीम मुकरी ने लिखा है "गज़ल संगीत को, कान नहीं सुनते, दिल सुनते है। गज़ल में निहित भावनाओं और अनुभूतियों को दिल ही समझते-पहचानते हैं और दिल ही उनकी आँच को भी महसूस करते हैं"।

आज गज़ल का जोर है-गज़ल का दौर है। आज गज़ल फिल्मों, महफिलों और संगीत सम्मेलनों के आकाश पर मस्ती भरी घटाओं की तरह छायी हुई है।

छायाचित्रः **राकेश सिन्हा, रतन कुमार** **सुशीला मिश्रा**

हिन्दी अनुवाद : **के.के. नैयुयर**

निदेशक संस्कृति विभाग उ.प्र. के लिये निदेशक भारतेन्दु नाट्य अकादमी ए-2/58, गोमतीनगर लखनऊ द्वारा प्रकाशित एवम् **शिवम आर्ट्स** 211, निशातगंज, लखनऊ दूरभाष-386389 द्वारा मुद्रित।